हिन्दी प्रकोष्ठ | संवादपत्र

भाषायी

चतुर्थ अंक 2024

विज्ञानं ब्रह्म

:: संरक्षक ::
प्रो. प्रगति कुमार
(माननीय कुलपति)

:: संपादक ::
डॉ. अनुराग कुमार
(नोडल अधिकारी, हिन्दी प्रकोष्ठ)

:: सह-संपादक ::
मिलिन्द शुक्ल
(छात्र सचिव, हिन्दी प्रकोष्ठ)

• 11 वीं शताब्दी की नृत्य करती हुई श्री गणेश की प्रतिमा

सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म 16 अगस्त 1904 को प्रयागराज (उत्तर प्रदेश) के पास निहालपुर में हुआ था। पिता रामनाथ सिंह ज़मींदार थे। अपनी प्रतिभा को दिखाते हुए सुभद्रा ने भी बचपन से ही कविता कहना शुरू कर दिया था। पहली कविता 9 वर्ष की आयु में प्रकाशित हुई जिसे उन्होंने एक नीम के पेड़ पर ही लिख दिया था। वह न सिर्फ कुछ ही देर में कविता लिख देती थीं बल्कि पढ़ाई में भी अग्रणी थीं। जितनी पसंदीदा वह अपनी अध्यापिकाओं की हो गयीं, उतनी ही सहपाठियों की भी। बचपन में कविता लिखने का जो कार्यक्रम शुरू हुआ तो फिर जीवन भर रहा। सुभद्रा का विवाह लक्ष्मण सिंह के साथ तय हुआ था। लक्ष्मण सिंह एक नाटककार थे और उन्होंने अपनी पत्नी की प्रतिभा को आगे बढ़ने में सदैव उनका सहयोग किया। सुभद्रा महिलाओं के बीच जाकर उन्हें स्वदेशी अपनाने व तमाम संकीर्णताएं छोड़ने के लिए प्रेरित करती थीं। अपनी गृहस्थी को संभालते हुए वह साहित्य और समाज की सेवा करती थीं। उन्होंने तीन कहानी संग्रह लिखे जिनमें बिखरे मोती, उन्मादिनी और सीधे साधे चित्र शामिल हैं। कविता संग्रह में मुकुल, त्रिधारा आदि शामिल हैं। उनकी बेटी सुधा चौहान का विवाह प्रेमचंद के बेटे अमृतराय से हुआ, उन्होंने अपनी मां की जीवनी लिखी जिसका नाम 'मिले तेज से तेज' है।

हिन्दी प्रकोष्ठ
श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय
कटड़ा, संघशासित जम्मू एवं कश्मीर,
भारत-182320
hindicell.smvdu.ac.in
hindi.cell@smvdu.ac.in

अनुक्रमणिका

1. भाषिक विमर्श	1
2. काव्य खंड	3
3. विस्मृत कवि	4
4. भाषा बोली विशेष	7
5. पुस्तक समीक्षा	9
6. यह कदम्ब का पेड़	12
7. वशिष्ठ नारायण सिंह	14
8. कथा खंड	15
9. पट्टचित्र चित्रकला	17

नास्ति मातृसभा प्रपा।।

माता के समान इस विश्व में कोई जीवनदाता नहीं।

पर्व

संस्कृत में पर्वन् शब्द का अर्थ 'जोड़, गाँठ या सन्धि' है जिका प्रयोग विशेषरूप से तो गन्ने जैसे पौधों के जोड़ों के संदर्भ में होता है लेकिन शरीर के जोड़ों या अस्थि-सन्धियों के लिए भी यह प्रयोग में लाया जाता है जिसके परिणामस्वरूप इसका एक अर्थ शरीर का कोई अंग या अवयव भी है। क्योंकि जोड़ या संधि किसी वस्तु या काल आदि को दो या अधिक भागों में विभाजित कर देते है इसलिए पर्वन् का अर्थ अन्तराल, विराम, खंड और किसी पुस्तक का विभाग या अध्याय भी है। 'महाभारत' के खंडों या अध्यायों के लिए पर्व (जैसे आदि पर्व, सभा पर्व, वन पर्व आदि) शब्द का ही प्रयोग किया गया है। इसी क्रम में आगे बढ़ते हुए पर्वन् शब्द सीढ़ी या सोपान के पग (step); किसी यौगिक के एक भाग या घटक; निश्चित समय या कालावधि तथा चन्द्रमा के पूर्णिमा या अमावस्या आदि परिवर्तन जेसे अन्य अर्थों का भी बोध कराता है।

यौगिक शब्दों में पर्वन् का रूप पर्व हो जाता है जैसा कि ऊपर उल्लिखित महाभारत के 'आदिपर्व', 'सभापर्व' आदि में देखाई देता है। नीचे कुछ और उदाहरण देखिए :

पर्वकाल=निश्चित अवधि में होने वाला चंद्रमा का परिवर्तन।
पूर्व दक्षिणा=वेद के किसी विशेष भाग को पढ़ाने के लिए आचार्य को दी जाने वाली राशि।
पर्व भेद=जोड़ों का तेज दर्द।
पर्ववल्ली = एक प्रकार की दूब या दूर्वा।
पर्व सन्धि = चांद की पूर्णता और परिवर्तन; चान्द्र पक्ष की प्रथम तथा पन्द्रहवीं तिथि की रात्रि की संधि।
पर्व स्फोट=उंगली चटकाना या मटकाना ।

जो पर्वन् या गाँठों से युक्त हो, ऊँचे-नीचे स्तरवाला हो, तरह-तरह की गाँठों जैसा हो या कहिए पर्व-वत् हो तो उसे पर्वत कहना ही पड़ेगा। जिसका पर्वत से संबंध हो या पर्वत से उत्पत्ति हो वह चाहे स्त्री हो या नदी उसे पार्वती और पर्व या परबत के वासी को परबतिया कहना भी उचित ही है। स्वाभाविक है मनुष्य ने जब भी किसी ग्रह-उपग्रह, कालचक्र, प्रकृति या ऋतु आदि में कोई पर्व, संधि, जोड़, विराम, अन्तराल, विभाजन या परिवर्तन देखा होगा, तो स्थिति के अनुसार कभी वह हर्षोल्लास से भर गया होगा, कभी कुतूहल, आश्चर्य और भय अनुभव किया होगा और कभी चमत्कृत हुआ होगा। इन अवस्थाओं के अनुरूप कभी वह सामूहिक रूप से आमोद-प्रमोद, व नृत्य-गान में रत हो गया होगा, कभी पवित्र नदियों में स्नान किया होगा या ईश्वर भक्ति और यज्ञादि के अनुष्ठान किए होंगे। इस प्रकार 'पर्वकाल' या संधिकाल नृत्य-गान, सुवस्त्रों और स्वादिष्ट भोजनों आदि के अवसर बन गए और पर्व में तीज-त्यौहार, मेलों-ठेलों और उत्सव आदि के आधुनिक अर्थ समाविष्ट हो गए। यहाँ यह ध्यान देने की बात है कि हमारी मध्यकालीन भाषाओं, पालि और प्राकृत में, संस्कृत पर्व से विकसित, गाँठ या ग्रंथि से संबद्ध, क्रमशः पब्ब (तने की गाँठ; जोड़), पब्ब (= दो संधियों या जोड़ों के बीच की दूरी) जैसे शब्द तो मिलते हैं लेकिन 'त्यौहार' या 'उत्सव' जैसा कोई अर्थ उनमें नहीं है।

सभ्यता

संस्कृत के 'सभा' शब्द की व्युत्पत्ति स्पष्ट नहीं है। इसका प्रयोग संस्कृत में किसी विशेष प्रयोजन के लिए लोगों का जमावड़ा तथा संगठन आदि के अर्थ में होता है। उदाहरण के लिए जनसभा या आम सभा जैसी सामान्य सभाओं तथा राजसभा, राज्यसभा, लोकसभा तथा विधानसभा जैसी विशिष्ट सभाओं में इस सभा शब्द को देखा जा सकता है। सभा में भाग लेने वाला या उपस्थित होने वाला सभासद या सभ्य कहलाता है। उसी प्रकार जैसे संसद (जहाँ ठीक से बैठा जाए अर्थात 'सभा') में बैठने वाला सांसद। जब 'सभा' है तो उसमें बैठने वालों के लिए कुछ कायदे-कानून तौर-तरीके या नियम तो होंगे ही। इन्हीं नियमों के समूह को सभ्यता कहा जाता है अर्थात् किसी 'सभासद' या 'सभ्य' से सभी के अमरान अपेक्षित व्यवहार। यदि कोई 'सभ्य' सभा में बैठने के नियमों का पालन नहीं करता, जैसे कि वक्ता या मंच की और पीठ करके बैठता है, शोर या बातचीत करता है, बीच-बीच में खड़ा होता है या बार-बार आता-जाता है तो उसे सत नहीं 'असभ्य' कहा जाएगा और उसके इस आचरण को 'असभ्यता'। मान लीजिए कोई राज-सभा है या राज-दरवार है तो उसमें बैठने के कुछ निश्चित नियम होते हैं। राजा का मंत्री कहाँ बैठेगा, सेनापति का स्थान कहीं होगा, प्रमुख राज-अधिकारी अपने पदक्रम से कहाँ-कहाँ बैठेंगे, निश्चित वेश-भूषा है तो उसे धारण करेंगे, राजा के आगमन की सूचना पर नियम के अनुसार अभिवादन करेंगे, जब तक राजा अपना आसन ग्रहण नहीं कर लेता, खड़े रहेंगे, आदि। यदि कोई इन पूर्व निर्धारित नियमों का पालन नहीं करता तो वह असभ्य (सभा में बैठने के अयोग्य) तो कहा ही जाएगा, राजा के कोप का भाजन भी बन सकता है। हमारी संसद में भी तो अध्यक्ष या पीठासीन अधिकारी को अधिकार है कि कार्यवाही में बाधा डालने वाले सांसद को सदन से बाहर निकाल दे। व्यापक रूप में सभ्यता व्यक्ति के बाहरी-व्यवहार अर्थात् उठने-बैठने, बात-चीत करने के तौर-तरीके, पहनावे, आवास और रहन-सहन के ढंग का नाम है। इसीलिए जब हम 'सिन्धुघाटी सभ्यता' या किसी अन्य सभ्यता की बात करते हैं तो वहाँ प्राप्त पात्रों, उपकरणों, घातुओं, घरों की संरचना तथा अन्य अवशेषों के आधार पर यह जानने का प्रयत्न करते हैं कि उस समय के लोगों का रहन-सहन कैसा था।

"

जो लोग अपनी चेतना को
सच्चे गुरु पर केंद्रित करते हैं
वे पूर्ण रूप से पूर्ण और
प्रसिद्ध होते हैं।

- गुरु अर्जुन देव जी महाराज

एक दिन की तितलियाँ

• सुनील कुमार महला
(हनुमानगढ़, राजस्थान)

जीवन तितलियों की तरफ
रंग-बिरंगा और वासंती है
आज़ाद है यह जीवन
तितलियों की तरह
न जाने क्यों समझता नहीं है आदमी ?
पदार्थ और विलासिता में रचा-बसा आदमी
याद रखिए कि
काफ़ी नहीं है सिर्फ और सिर्फ जीना
जीवन की आबोहवा में महक, सुरभि होनी चाहिए
होनी चाहिए थोड़ी गुनगुनी धूप
पदार्थ और विलासिता से परे
जीवन की मीठी-तीखी किरणों का अहसास होना चाहिए
आदमी को
तितलियों का जीवन
जीवन का उजला पक्ष ही तो है
लेकिन आदमी केवल तितलियों की सुंदरता, कोमलता देखता है
तितलियों सा कोलाहल जीवन में महसूस नहीं करता
जीवन की धूप-छांव , अंत तो शुरूआत मात्र है
अक्सर खुशियां
तितलियों की तरह होतीं हैं
आदमी खुशियां ढूढ़ता है
तो खुशियां ब्रह्मांड में कहीं खो जाती हैं
लेकिन
मौन रहकर, विनम्रता से ग़र करता है इंतज़ार
तो चलीं आतीं हैं अनगिनत खुशियां

बिखर जाते हैं खुशियों के फूल
अपने भाग्य को नहीं कोसती तितलियां कभी
वो होतीं हैं
क्षण-भंगुर
लेकिन जीवन से संतुष्ट हमेशा
फूलों से रस इकट्ठा करते हुए
वे जीवन को सहजता से जीतीं हैं
घाटियों, बगीचों में फूलों पर मंडरातीं
ईश्वर के अनमोल उपहारों से आनंदित होतीं हैं तितलियां
अपने संक्षिप्त क्षणों को भी पल-पल रोशन करतीं
पहाड़ों की चोटियों से मैदान -रेगिस्तान तक
स्वतंत्र, स्वच्छंद
जीवन के रोमांच को साझा करतीं
जीवन एक मंच है
यहां एक पल आना है, दूसरे पल जाना है
और हम सब हैं
एक दिन की तितलियां...!

नागरीदास

ये कृष्णगढ़ (राजस्थान) की राजधानी रूपनगर में पौष कृष्ण द्वादशी संवत् 1758 को महाराज राजसिंह के पुत्र साँवन्त सिंह के रूप में जन्मे और पिता की मृत्यु के पश्चात् राजा बने। इनके भाई बहादुर सिंह ने जोधपुरनरेश की सहायता से इन्हें अपदस्थ कर राज्य अधिकृत कर लिया। तदुपरान्त सावन्त सिंह ने मराठों की सहायता से बहादुरसिंह को पराजित कर राज्य पर पुनः अधिकार कर लिया। इस गृहकलह का इनके मानस पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि ये आस्विन शुक्ल दशमी संवत् 1814 को अपने पुत्र सरदार सिंह को राज्यभार सौंपकर अपनी उपपत्नी बणीठणी के साथ वृन्दावन चले गये। नागरीदास इनका साम्प्रदायिक नाम था। ये आजीवन कृष्णलीला का गान करते हुए संवत् 1821 में स्वर्ग सिधारे।

इनकी 75 रचनाएँ कही जाती हैं, जिनमें 70 का 'नागरसमुच्चय' नाम से बहुत पहले प्रकाशन हुआ था। डा. किशोरीलाल गुप्त द्वारा 'नागरीदास ग्रन्थावली' का सम्पादन-प्रकाशन भी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा करा दिया गया है।

दूलह

दूलह प्रख्यात रीतिकवि कालिदास त्रिवेदी के पौत्र तथा उदयनाथ 'कवीन्द्र' के पुत्र थे। ये अपने पिता के साथ अमेठीनरेश गुरुदत्त सिंह 'भूपति' के दरबार में रहे। यहीं इन्होंने अपना प्रसिद्ध ग्रन्थ 'कविकुलकण्ठाभरण' लिखा। गुरुदत्त सिंह ने अपने 'रसरत्न' में इस कृति का सम्मानपूर्वक उल्लेख किया है। ये बूंदी के राव बुधसिंह तथा बादशाह मुहम्मदशाह के दरबार में भी कुछ समय रहे। 'कविकुलकण्ठाभरण' के अतिरिक्त 'दूलहविनोद' रचना का भी उल्लेख मिलता है जो अभी प्रकाशित है।

मंचित

'मंचित बुन्देलखण्ड के मऊ गाँव के रहने वाले थे और संवत् 1836 में वर्तमान थे। इनकी यो पुस्तक की सूचना मिलती है कृष्णायन और सुरभीदानलीला। इनमें 'कृष्णायन' आज अनुपलब्ध है और 'सुरभीदानलीला' अप्रकाशितः मंचित के कुछ श्रृंगारिक छन्द काव्यसंग्रहों में उपलब्ध होते हैं।

“

ॐ सर्वेषां स्वस्तिर्भवतु।
सर्वेषां शान्तिर्भवतु।
सर्वेषां पूर्ण भवतु।
सर्वेषां मङ्गलं भवतु।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ सब कुशल मंगल हो। हम सभी पर शांति बनी रहे। सभी (लोगों) की पूर्ति हो। सबका कल्याण हो।
ॐ शांति, शांति, शांति।

”

“

गुणाकरं कृपाकरं सुभान्तिदं यशस्करम्।
निजात्मबुद्धिदायकं भजेऽहमञ्जनीसुतम्॥

मैं अंजनी पुत्र की पूजा करता हूँ, जो गुणों का भंडार है, जो अत्यंत दयालु हैं, जो शांतिप्रद तथा गौरवशाली है और जो शाश्वत आत्म-ज्ञान के दाता हैं।

(हनुमत्स्तोत्रम् ३)

”

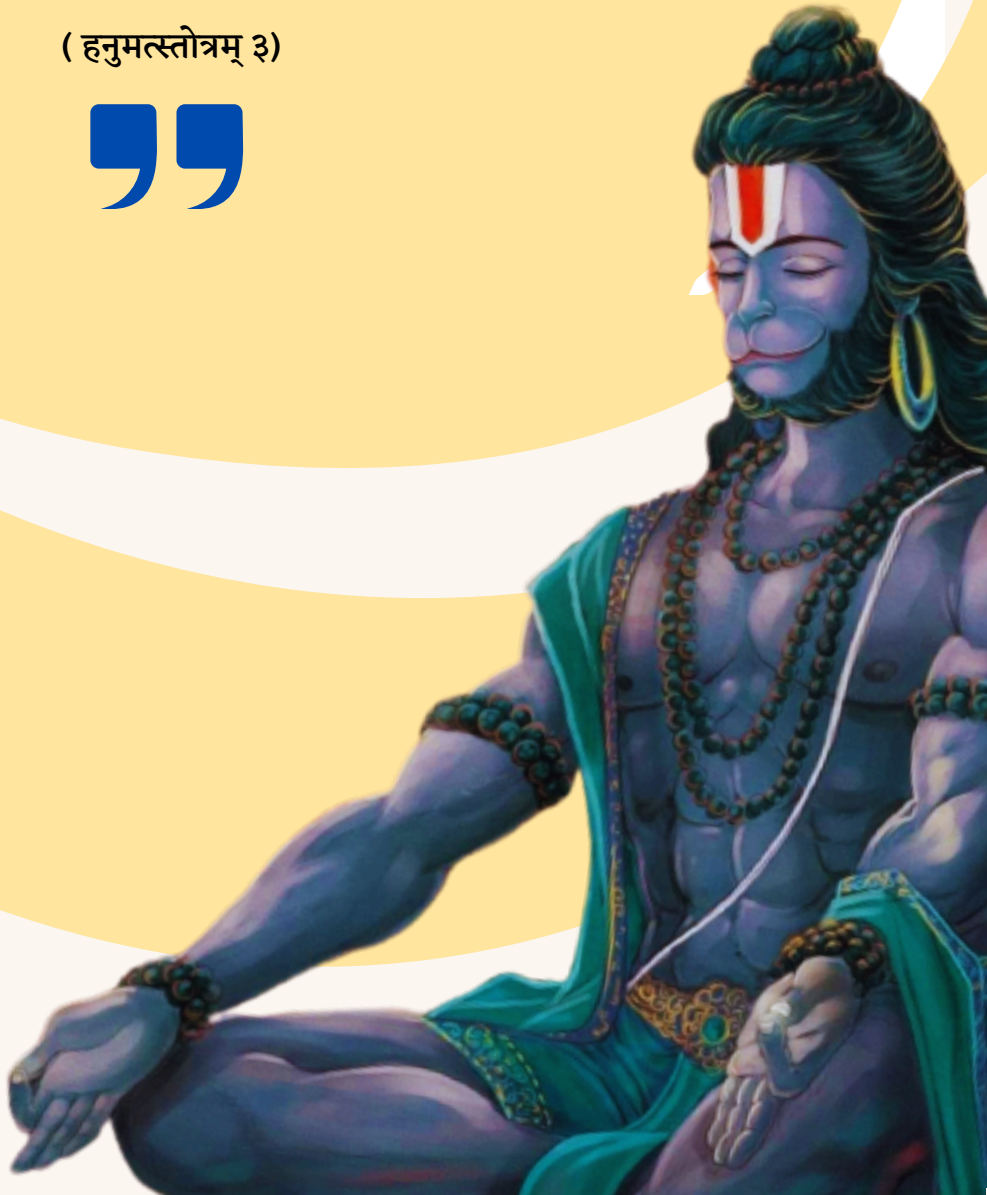

हाड़ौती भाषा के विषय में

हड़ौती भाषा (इंडो-आर्यन भाषा परिवार) राजस्थान में बोली जाती है। राजस्थानी इंडो-आर्यन भाषा परिवार का एक भाषा समूह है। वर्तमान नाम राजस्थान 1829 में कर्नल टॉड द्वारा प्रस्तुत किया गया था और इसने धीरे-धीरे 1800 में जॉर्ज थॉमस द्वारा दिए गए पुराने नाम 'राजपूताना' को बदल दिया। समय के साथ राजस्थान नाम मुख्य रूप से 1 नवंबर 1956 को 'राज्य पुनर्गठन' के बाद स्थापित हुआ। और फलस्वरूप इस राज्य में बोली जाने वाली भाषा के स्वरूप को राजस्थानी की 'विविधताएं' कहा गया। हरोती भारत के राजस्थान में 80 लाख लोगों द्वारा बोली जाती है (भारत की जनगणना, 2011)। राजस्थानी क्षेत्र की सभी आठ भाषाओं की उत्पत्ति सुरसेनी अपभ्रंश से हुई है। इसका शब्द क्रम भाषा की हिस्सेदारी प्रकार का है। वे हैं - हड़ौती (कोटा, बूंदी, झालावाड़ और बारां में बोली जाती है), बागरी (गंगानगर और हनुमानगढ़ में बोली जाती है), शेखावती (झुंझुनू और सीकर में बोली जाती है), वागारी (बानसवाड़ा, डूंगरपुर और चित्तौड़गढ़ में बोली जाती है), ढूंढाड़ी (यह बोली जाती है) जयपुर, टोंक और सवाई माधवपुर), मेवाती (अलवर, भरतपुर, धौलपुर में बोली जाती है), मारवाड़ी (जोधपुर, बीकानेर, बाड़मेर, जैसलमेर, चूरू, पाली, अजमेर, नागौर में बोली जाती है), और मेवाड़ी (उदयपुर और राजसमंद में बोली जाती है) .

इन 8 भाषाओं में से वागारी, बागरी और हड़ौती जीवित-अवर्गीकृत भाषाओं के अंतर्गत आती हैं।अवर्गीकृत भाषाएँ वे भाषाएँ हैं जिनकी आनुवंशिक संबद्धता स्थापित नहीं की गई है, मुख्यतः विश्वसनीय डेटा की कमी के कारण। व्याकरणिक श्रेणियां जो इसकी पड़ोसी भाषाओं से निकटता से संबंधित हैं, और आमतौर पर डेटा की कमी के कारण जांच नहीं की जाती हैं, और विशेष रूप से भाषा-विशिष्ट डेटा जो अन्य भाषाओं से निकटता से संबंधित नहीं हैं; और यह अपने अधिक दूर के संबंधों पर अकादमिक सहमति बनाने का भी एक प्रयास है जो अभी तक स्थापित नहीं हुए हैं।

यह लेख इस तथ्य पर प्रकाश डालता है कि राजस्थानी एक भाषा नहीं है बल्कि यह कुछ प्रमुख/छोटी भाषाओं का एक समूह है जो एक-दूसरे के लिए पारस्परिक रूप से समझ में आने योग्य हैं लेकिन भाषाई रूप से भिन्न हैं।हड़ौती भारत में राजस्थान के दक्षिणी क्षेत्र का नाम है। इस क्षेत्र में चार जिले हैं कोटा, झालावाड़, बूंदी और बारां। इस क्षेत्र के मूल वक्ता हड़ौती को अपनी मातृभाषा या हिंदी को अपनी भाषा के रूप में उपयोग करते हैं।

हड़ौती अपनी ध्वनिविज्ञान, आकृति विज्ञान और वाक्यविन्यास में किसी भी अन्य भाषा की तरह ही समृद्ध और विविध है; और इसलिए इसका उपयोग जटिल मानवीय विचारों को स्थानांतरित करने के लिए अभिव्यक्ति और संचार के एक प्रभावी माध्यम के रूप में किया जा सकता है, जो किसी भी भाषा की एक विशेषता है। प्रभावशीलता की दृष्टि से हड़ौती की विभिन्न वाक्यात्मक विशेषताएं अंग्रेजी या हिंदी जितनी ही प्रभावशाली हैं।

हाड़ौती भाषा के विषय में

इसे हिंदी भाषा की बोलियों में से एक मानने के विचार से समझौता न करते हुए वास्तव में आम आदमी/गैर-भाषाविद् के मन में यह गलत धारणा है कि जिन भाषाओं में पारस्परिक सुगमता का स्तर बहुत अधिक है, उनका नाम किसी के नाम पर रखा जा सकता है। किसी स्थान का भौगोलिक क्षेत्र या किसी विशेष क्षेत्र के बोलने वालों की संख्या जो उस भाषा की संवैधानिक स्थिति की वकालत करने के लिए राजनीतिक रूप से अधिक जागरूक हैं। भाषायी रूप से कहें तो किसी भाषा की स्थिति निर्धारित करने के लिए ये दोनों विचार प्रक्रियाएं गलत हैं, जिसके तहत ये हरोती भाषी विषय आते हैं, जिसके बारे में हमारा मानना है कि उन्होंने इस समृद्ध भाषा को देने के लिए पर्याप्त अच्छा काम नहीं किया है।

(हाड़ौती भाषा पर डॉ. अमिताभ विक्रम द्विवेदी के शोध पत्र के अंश)

1857 में आधुनिक गुजरात में जन्मे, श्यामजी कृष्ण वर्मा ने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में संस्कृत पढ़ाने से पहले, भारत में अपनी शिक्षा पूरी की।

1905 में उन्होंने इंडिया हाउस और द इंडियन सोशियोलॉजिस्ट की स्थापना की, जो उस समय ब्रिटेन में भारतीय छात्रों के बीच राष्ट्रवादियों के लिए एक संगठित बैठक स्थल के रूप में तेजी से विकसित हुआ और भारत के बाहर क्रांतिकारी भारतीय राष्ट्रवाद के सबसे प्रमुख केंद्रों में से एक था। कृष्ण वर्मा अभियोजन से बचने के लिए 1907 में पेरिस चले गए। मासिक भारतीय समाजशास्त्री राष्ट्रवादी विचारों का एक केंद्र बन गया और इंडियन होम रूल सोसाइटी के माध्यम से, उन्होंने भारत में ब्रिटिश शासन की आलोचना की। वर्मा, जो बॉम्बे आर्य समाज के पहले अध्यक्ष बने, स्वामी दयानंद सरस्वती के प्रशंसक थे और उन्होंने वीर सावरकर को प्रेरित किया जो लंदन में इंडिया हाउस के सदस्य थे। वर्मा ने भारत के कई राज्यों के दीवान के रूप में भी कार्य किया।

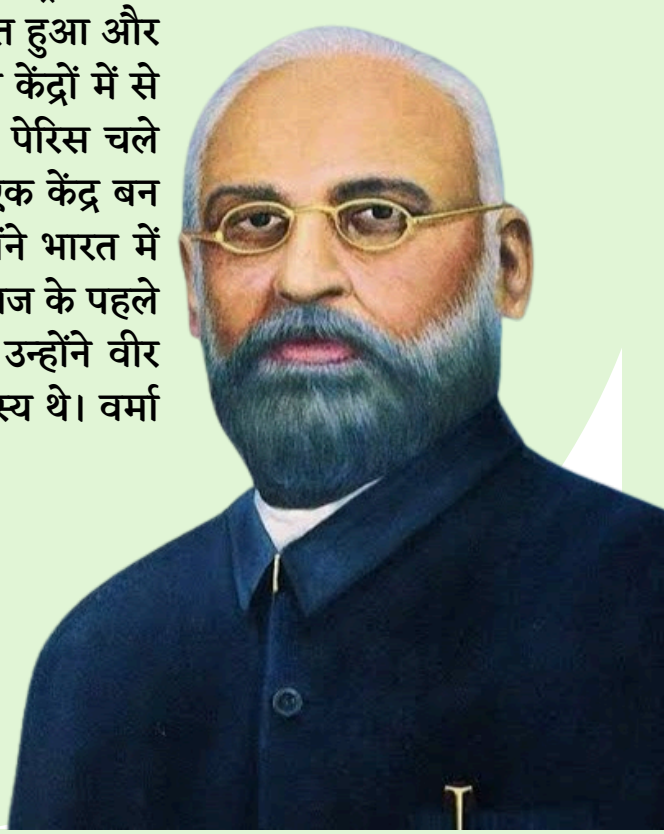

बाल कविता संग्रह : बच्चों का मन
रचनाकार : मईनुदीन कोहरी "नाचीज़ बीकानेरी", बीकानेर
प्रकाशक : राजस्थान कम्प्यूटर एंड प्रिंटर्स, बीकानेर

प्रकाशन वर्ष : 2023
मूल्य : ₹ 80 / -
समीक्षक : डॉ. शिवराज भारतीय, नोहर (राज)

किसी भी रचनाकार के लिए बाल साहित्य सृजन उसके चरम संतुष्टि का विषय है। बालक निश्छल- निर्मल, सरस-सरल भावों से समावेशित ईश्वर की अनुपम कृति है। ईश्वर की इस अनूठी कृति के लिए सृजन करना किसी भी रचनाकार के लिए परम सौभाग्य एवं आनंद का विषय है। बालक के लिए सृजन करने हेतु बालक जैसा ही मन भी होना अपेक्षित है। बाल साहित्य सृजक आयु की दृष्टि से भले ही प्रौढ हो, किंतु उसके अंदर कहीं ना कहीं एक बच्चा मौजूद रहता, तभी वह बच्चों के लिए लिखता है । यह भाव नाचीज बीकानेरी मोइनुद्दीन कोहरी की बाल काव्य कृति 'बच्चों का मन ' की बाल कविताएं पढ़कर प्रस्फुटित हुए।

कोहरी जी भले ही अपनी आयु के अमृत काल को दस्तक देने जा रहे हैं ,किंतु उनमें आज भी एक भोला -भाला ,सहज -सरल प्रकृति का शिशु कदमताल कर रहा है। तभी 'बच्चों का मन' परखती विविध विषयों की 58 कविताएं रची गई है। वरिष्ठ बाल साहित्यकार श्री बुलाकी शर्मा कृति की भूमिका में लिखते हैं - 'गीतों का स्वर कहीं भी उपदेशात्मक नहीं है। बच्चे स्वयं से ,अपने हम उम्र साथियों से संवाद करते दिख रहे हैं।' राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर के आर्थिक सहयोग से राजस्थान कंप्यूटर एंड प्रिंटर्स बीकानेर द्वारा 2023 में प्रकाशित मोइनुद्दीन कोहरी जी की 58 बाल कविताओं का यह सुंदर संग्रह है। चौंसठ पृष्ठीय इस संग्रह की कविताओं में प्रकृति, संस्कृति ,देशभक्ति, तीज - त्यौहार ,बच्चों की दिनचर्या, बचपन की चिंता, जीव-जन्तुओं से जुड़े रोचक बाल गीत हैं। अनेक बाल गीतों को गुनगुनाने का भी मन होता है।

गांव शहर में अलख जगाएं ,
आओ सब मिल पेड़ लगाएं ।
(पेड़ के उपहार)

कवि का बाल मन दुनियादारी में अमीर गरीब के बीच की खाई और भेदभाव से अनजान है। राम जी से ही इसका कारण पूछता है -

यह भेद क्यों किया राम जी,
समझाओ तो हमें राम जी ।
कुछ रोटी रोटी को तरसे
किसी के घर में रुपए बरसे
तेरी माया हम नहीं जाने
यह कैसा खेल है राम जी
(रामजी-गीत)

कोहरी जी के अनेक गीत युवा शक्ति को आगे बढ़ने, उत्साहित रहने, व जन-जागरण करने की प्रेरणा भी देते हैं -

जागो जागो रे
सेवा का हथियार हाथ में
'मुझको नहीं तुझको ' नारे से
दुखियों के दुख दर्द को मिटाना है जागो रे.....(युवा शक्ति जागो रे)

इसी भाव को लेकर 'साथी आगे तुझे बढ़ाना है, 'देश हमारा अपना है' ,"शहीद आज भी जिंदा है", "भारत का मान", " स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत " जैसे देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत सुंदर बाल गीत लिखे गए हैं ।

बाल गीतों के इस संग्रह में स्वच्छता को लेकर भी अनेक गीत लिखे गए हैं। इनके अलावा "प्यारे टीचर","मेरे गुरुजी", "मैं मैडम बन जाऊं" ,"पेड़ के उपहार, "कितना प्यारा मेरा उपवन ", "धरती का बेटा" "अपनी राह", घोड़ा , "सब्जी वाला", जीना सीख लिया", "गांधी जी के बंदर ", विनती सुन लो" ,"समय की कीमत" , "फूल", "चूहा", "जंगल में मंगल", "झूला झूले बेटियां", "किसान" ,"तुलसी का पौधा" जैसे विविध विषय पर बच्चों के लिए प्रेरणादाई बाल गीत संकलित हैं।

संग्रह के गीतों में भावात्मक सुंदरता हैं ,किंतु अनेक बाल गीतों में लयात्मकता एवं संगीतात्मकता का अभाव है। मात्राएं बेमेले होने से गेयता भंग होती है। जैसे -

भिन्न-भिन्न आकार के घोंसले
वहीं दाना चुग्गा पानी से
पेड़ टहनियां झाड़ी
उन पर फुदक-फुदक
सुनहरी हरी काली चिड़िया
(चिड़ियाघर)

इसी प्रकार -
झबरीले काले बालों वाले
नाचे भालू भोले भाले
कंगारू चीतल चीते यहां
हिरण जिराफ सबको भाए
(बालदिवस)

कृति में कहीं-कहीं वर्तनी सुधार की आवश्यकता भी महसूस होती है। कोहरीजी हिंदी व राजस्थानी के बाल साहित्यकार हैं। यह इनकी आठवीं कृति है। आप निरंतर सृजनरत रहकर बच्चों के लिए और भी सुंदर व प्रेरणादायी बाल गीत लिखते रहेंगे ऐसी आशा और विश्वास है।

“

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।
यज्ञं वष्टु धियावसुः ॥

पवित्र बनाने वाली, पोषण देने वाली, बुद्धिमतापूर्वक ऐश्वर्य प्रदान करने वाली देवी सरस्वती ज्ञान और कर्म से हमारे यज्ञ को सफल बनाए।

(ऋग्वेद १.३.१०)

”

यह कदम्ब का पेड़

- सुभद्राकुमारी चौहान

यह कदंब का पेड़ अगर माँ , होता यमुना तीरे
मैं भी उस पर बैठ कन्हैया बनता धीरे–धीरे

ले देतीं यदि मुझे बांसुरी तुम दो पैसे वाली
किसी तरह नीची हो जाती यह कदंब की डाली

तुम्हें नहीं कुछ कहता पर मैं चुपके–चुपके आता
उस नीची डाली से अम्मा ऊँचे पर चढ़ जाता

वहीं बैठ फिर बड़े मजे से मैं बांसुरी बजाता
अम्मा–अम्मा कह वंशी के स्वर में तुम्हें बुलाता

सुन मेरी वंशी को माँ तुम इतनी खुश हो जातीं
मुझे देखने काम छोड़ तुम बाहर तक आतीं

तुमको आता देख बांसुरी रख मैं चुप हो जाता
पत्तों में छिपकर धीरे से फिर बांसुरी बजाता

गुस्सा होकर मुझे डांटती, कहती नीचे आजा
पर जब मैं ना उतरता, हंसकर कहतीं 'मुन्ना राजा'

नीचे उतरो मेरे भैया तुम्हें मिठाई दूंगी
नए खिलौने, माखन-मिसरी, दूध-मलाई दूंगी

मैं हंस कर सबसे ऊपर टहनी पर चढ़ जाता
एक बार 'माँ' कह पत्तों में वहीं कहीं छिप जाता

बहुत बुलाने पर भी माँ जब नहीं उतर कर आता
माँ, तब माँ का हृदय तुम्हारा बहुत विकल हो जाता

तुम आँचल फैला कर अम्मा वहीं पेड़ के नीचे
ईश्वर से कुछ विनती करतीं बैठी आँखें मींचे

तुम्हें ध्यान में लगी देख मैं धीरे–धीरे आता
और तुम्हारे फैले आँचल के निचे छिप जाता

तुम घबरा कर आँख खोलतीं, पर माँ खुश हो जाती
जब अपने मुन्ना राजा को गोदी में ही पातीं

इस तरह कुछ खेला करते हम-तुम धीरे–धीरे
यह कदंब का पेड़ अगर माँ होता यमुना तीरे।

वशिष्ठ नारायण सिंह

जन्म: 2 अप्रैल 1942 (ग्रा. बसंतपुर, भोजपुर, बिहार) | निधन: 14 नवंबर 2019

आर्यभट्ट व रामानुजन की परम्परा के तेज पुंज, पद्मश्री से विभूषित, महान गणितज्ञ वशिष्ठ नारायण सिंह से जुड़े प्रेरक प्रसंग:

वशिष्ठ ने नेतरहाट स्कूल की परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। हायर सेकेंड्री परीक्षा के टॉपर रहे। उनके लिए पटना विश्वविद्यालय का कानून बदला। सीधे बीएससी ऑनर्स किया। साइंस कॉलेज के तत्कालीन प्रिंसिपल डॉ. नागेंद्र नाथ ने कॉलेज में आए प्रो. केली से वशिष्ठ का परिचय कराया। प्रो. केली की पहल पर वशिष्ठ कैलिफोर्निया पहुंचे।

वशिष्ठ नारायण शैक्षणिक जीवनकाल में बेहद कुशाग्र थे। पटना साइंस कॉलेज में प्रो.बीकन भगत गणित के शिक्षक थे। छात्र वशिष्ठ ने सवाल हल करने के उनके तरीके पर सवाल उठाया और खुद कई तरीके से हल कर दिखा दिया। प्रो. भगत ने इसे अशिष्टता माना। शिकायत प्राचार्य प्रो. नागेंद्र नाथ से की। प्राचार्य ने उन्हें तलब किया। गणित के कई सवाल किए। वशिष्ठ ने हर सवाल को कई तरीके से हल कर दिया।

नासा के अपोलो स्पेस मिशन के समय अचानक 31 कंप्यूटर कुछ देर के लिए बंद हो गए। मिशन से जुड़े वैज्ञानिक और गणितज्ञों को निराश हो गए। इसी बीच डॉ.वशिष्ठ नारायण सिंह ने पल भर के लिए आंखें बंद कीं और कागज पर कुछ लिखा। जब कंप्यूटर ऑन हुए तो सभी यह देख हतप्रभ थे कि कंप्यूटर और वशिष्ठ बाबू की गणना एक ही थी।

अद्भुत मेधा के धनी डॉ वशिष्ठ का दाखिला 8 सितंबर, 1965 को बर्कले यूनिवर्सिटी में हुआ। 1966 में वह नासा में काम करने लगे। 1967 में वह कोलंबिया इंस्टीट्यूट ऑफ मैथेमेटिक्स के निदेशक बने। तब उम्र सिर्फ 21 साल थी। 1969 में पीएचडी का शोध पत्र दाखिल किया जो सुर्खियों में रहा। बर्कले यूनिवर्सिटी ने उन्हें 'जीनियसों का जीनियस' कहा था। कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी से ही उन्होंने पीएचडी की डिग्री ली और वॉशिंगटन विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर बन गए। नासा में भी काम किया। भारत लौटकर उन्होंने आईआईटी कानपुर, आईआईटी मुंबई और आईएसआई कोलकाता में नौकरी की।

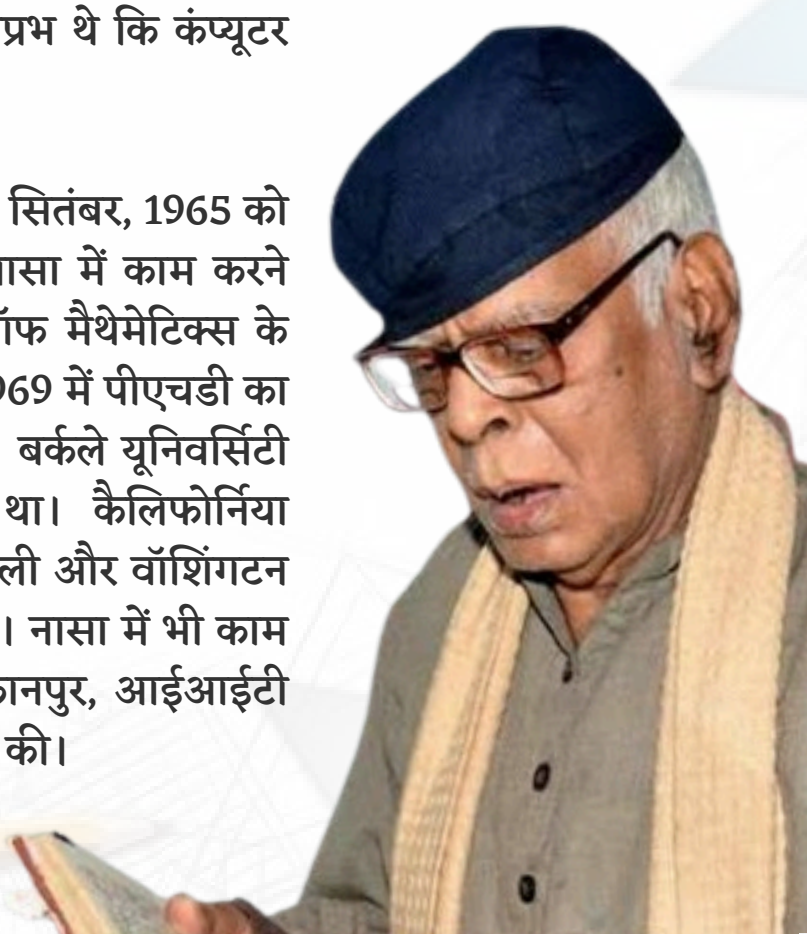

श्री शंकर-श्री कृष्ण संवाद

महाभारत के युद्ध के प्रारंभ होने से पूर्व भगवान श्री कृष्ण कुंतीपुत्र अर्जुन को साथ लेकर भगवान शंकर के पास आशीर्वाद व सहायता हेतु कैलाश पर्वत गए। भगवान कृष्ण को देखकर महादेव ने कहा-

अहो भाग्य आनंद हिए,
श्री कृष्ण चंद्र कैलाश पधारे।।
आज को रुप निहारि भये,
यह लोचन मोहन तृप्त हमारे।।
यही रुप देखने को नंद ग्राम दौड़ि गयो,
देखा नाथ खेली रहे शक्तियों के साथ साथ।।
ब्रह्मा भरमाये चकराये सब देव बृंद,
समझि ना सके, जो खेल खेलत थे विश्वनाथ।।
वो ही आज शंभू पास,
खेल करत आये कृष्ण।।
श्रद्धा से नमन करत,
आज्ञा हित झुकत माथ।।
बोलिये है कौन कार्य,
काहे को कष्ट कियो।।
आज्ञा पूर्ण करने को,
सदैव बढ़े शंभू हाथ।।

भगवान शंकर के वचन सुनकर भगवान कृष्ण से कहा-

अपने निज भक्त के मान हितै,
बृजधाम गये शिव शंभू हमारे।।
तब खेलत थे अब खेलत हैं,
पर खेल हैं वो सब आप सहारे।।
अन्याय मिटै न अनीति रहे,
यह खेल भी निश्चय हो पूर्ण हमारा।।
आश यही है निराश न करना,
इस खेल में भी हमें देना सहारा।।

“

श्रेष्ठ व्यक्तियों का
सम्मान करके उन्हें
अपना बना लेना दुर्लभ
पदार्थों से भी अधिक
दुर्लभ है।

- संत तिरुवल्लुवर

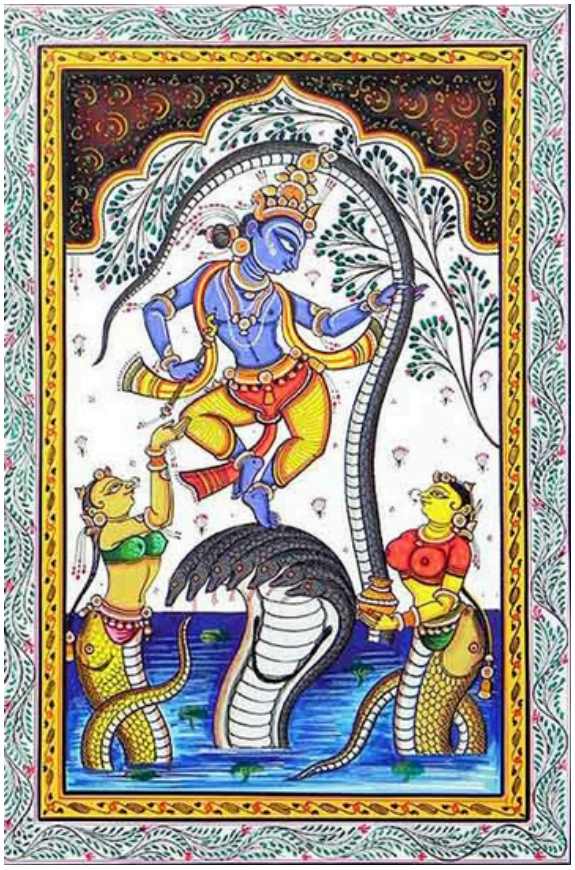

• कालिया नाग पर नृत्य करते हुए भगवान श्री कृष्ण का पट्टचित्र

• पुरी मंदिर का पट्टचित्र मानचित्र, जिसमें कई मानव और पवित्र आकृतियाँ, इमारतें और जानवर हैं। पुरी, ओडिशा के एक चित्रकार द्वारा, लगभग : 1880/1910

पट्टचित्र चित्रकला

पट्टचित्र संस्कृत के शब्द "पट्ट" से बना है, जिसका अर्थ है कपड़ा, और "चित्र", जिसका अर्थ है चित्र, "पट्टचित्र" नाम बनाया गया था। यह सबसे पुराने और सबसे प्रसिद्ध ऐतिहासिक कला रूपों में से एक है, यह है ऐसा माना जाता है कि इसकी शुरुआत 12वीं शताब्दी में हुई थी।

पेंटिंग की पट्टचित्र शैली कला के सबसे पारंपरिक और प्रसिद्ध रूपों में से एक है, और यह ज्यादातर पश्चिम बंगाल और ओडिशा में प्रचलित है। प्रागैतिहासिक और मध्ययुगीन काल के दौरान, ओडिशा को उत्कल के नाम से जाना जाता था जिसका अर्थ है "कला और शिल्प में उत्कृष्टता की भूमि। ओडिशा की एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत कला रूपों में दर्शायी जाती है और एक परंपरा को दर्शाती है जो शिल्पकारों की रचनात्मक कल्पनाओं में अभी भी जीवित है। पट्टचित्र कलाकारों ने अपने प्रतीक चित्रों के लिए प्राथमिक प्रेरणा हिंदू पौराणिक कथाओं से प्राप्त की। वैष्णव आस्था और जगन्नाथ उड़िया चित्रकला के विषय के केंद्र में हैं। भगवान जगन्नाथ, भगवान कृष्ण का स्वरूप, पट्टचित्र संस्कृति के पहली बार उभरने के बाद से ही इसकी प्राथमिक प्रेरणा रहे हैं। पट्टचित्र में नियमित रंगों का प्रयोग नहीं किया जाता है। इसमें ऑयल पेंट, वॉटर कलर, क्रेयॉन या पोस्टर रंगों के लिए कोई जगह नहीं है। इसके बजाय, पट्टचित्र अपने रंग बनाने के लिए सब्जियों, पत्थरों और खनिजों सहित विभिन्न प्रकार के कच्चे संसाधनों का उपयोग करता है। उदाहरण के लिए, शंख का उपयोग पट्टचित्र की सफेदी बनाने के लिए किया जाता है। उपयोग करने से पहले, गोले को पीसकर चूर्ण बनाया जाता है, पकाया जाता है और फिर छाना जाता है।

हिंगुला, एक खनिज, और यहीं से लाल रंग की उत्पत्ति होती है। पीला रंग हरितला को पीसकर बनाया जाता है, जो स्थानीय रूप से जाना जाने वाला एक पीला पत्थर है। पट्टचित्र के कलाकार काले लोगों पर जले हुए नारियल के छिलके या कालिख से बने रंग का उपयोग करते हैं। पट्टचित्रों को चित्रित करने के लिए पांच प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है। सफेद (शंख), काला (काजल या काला), पीला (हरिताला), वर्मिलियन (हिंगुला), और भारतीय लाल (गेरू)।

न ह्यतो धर्मचरणं किञ्चिदस्ति महत्तरम्।
यथा पितरिशुश्रूषा तस्य वा वचनक्रिया ॥

पिता की बात सुनना अथवा उनका कहा मानना धर्म का सबसे महान् पालन है।

वाल्मीकिरामायणम् 2.19.22

• श्रीवैकुंठम कल्लापीरन मंदिर (थूथुकुडी, तमिलनाडु) में स्थित श्री राम की प्रतिमा

© हिन्दी प्रकोष्ठ (श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय)